ISSN : 2583-2948

प्रो॰ सुनील बाबुराव कुलकर्णी
निदेशक केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

संत साहित्य के माध्यम से विविध कौशल विकास

संत साहित्य संपूर्ण मानव जीवन का सार है। उसमें मानव जीवन का समस्त तत्वज्ञान अंतर्निहित है। आदिकाल से लेकर अब तक के समसामयिक जीवन से संबंधित एक भी पहलू या समस्या ऐसी नहीं है जिसका वर्णन विवेचन एवं विश्लेषण का अंतर्भाव संत साहित्य में न हुआ है। कौशल विकास भी उसके लिए अपवाद नहीं है।

वर्तमान जीवन में मनुष्य के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए उसका बहु आयामी और सर्वगुण संपन्न होना अनिवार्य है। इसके लिए उसके व्यक्तित्व के भीतर विविध कौशल जो आरंभिक अवस्था से ही सुप्तावस्था में विद्यमान है उन्हें हम संत साहित्य के माध्यम से सहजता से विकसित कर सकते हैं। उनमें मूलभूत चार कौशल जिनमें श्रवण,वाचन, लेखन और अभिव्यक्ति आदि चार कौशलों का समावेश किया जाता है, संवाद कौशल इनमें औपचारिक अनौपचारिक, लिखित एवं मौखिक दोनों प्रकार का संवाद कौशल महत्वपूर्ण है, प्रबंधन कौशल जिनमें समय प्रबंधन, तनाव प्रबंधन कौशल महत्वपूर्ण है। नेतृत्व विकास कौशल,समुह प्रबन्धन कौशल,अभिनय कौशल और इवेंट मैनेजमेंट जैसें कौशल अतिशय महत्वपूर्ण कौशलों में गिनाए जा सकते हैं। इन सब पर संतों ने अपने अभंग,पद,साखी,दोहे, रमैनी,उलटबांसियां, आदि के माध्यम से कम अधिक मात्रा में क्यों न हो लेकिन पर्याप्त प्रकाश डाला है। जो वर्तमान पीढ़ी के लिए न केवल उपदेश परक बल्कि आदर्शवादी सिध्द हो सकता है।

संत साहित्य का जब हम बारिकी से अध्ययन करते हैं तब एक बात हमें सहजता से ध्यान में आती है कि लगभग सारा संत साहित्य मानवीय जीवन से निर्मित एवं सृजित हुआ है। यह सारें संत जहां एक ओर अपने अराध्य के भक्ति में लीन रहे हैं वहीं दूसरी ओर संसार से पलायन न कर जीवन के अंतिम समय तक उन्हें जन्म के साथ जो पारंपरिक व्यवसाय मिला उससे जुड़े रहकर अपना निहित कर्म भी निभाते रहे हैं। इस कर्म का निर्वहन करते समय वह भक्ति के साथ- साथ मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए पोषक विचारों को लेकर भी जनजागृति करते रहे हैं। हमने दूर्भाग्यवश उनके द्वारा प्रतिपादित विचारों को केवल भजन-पूजन,कीर्तन-प्रवचन तक ही सीमित रखा इस कारण हमें उनके विचारों को आत्मसात करने के बाद जो अपेक्षित लाभ मिलने वाले थे वह नहीं मिल पाए। उपर्युक्त कौशल विकास से संबंधित विचार भी उसके लिए अपवाद नहीं है।